जीवन का पेड़

अमेज़ॉन की लोक कथा

चार्लोट गुड्लैन, चित्र: स्टीव डोरैडो

जीवन का पेड़

अमेज़ॉन की लोक कथा

पात्र

कोटी, एक ग्रामीण

कोटी का भाई, साकी

अन्य ग्रामीण

बहुत समय पहले, रेन-फारेस्ट के एक गाँव में लोगों के लिए खाने के लिए ज्यादा भोजन नहीं था. लोग जड़ों और बेरों पर जीवित रहते थे. वहां पेड़ों पर कभी कोई फल नहीं उगते थे.

एक दिन, कोटी नाम के एक युवक को बहुत भूख लगी. वह भोजन की तलाश में घने जंगल में भटकता रहा. अचानक, उसने एक मीठी खुशबू सूंघी और उसका पीछा किया.

वो गंध कोटी को एक खुली जगह पर
ले गई, जहाँ एक अद्भुत पेड़ खड़ा था.
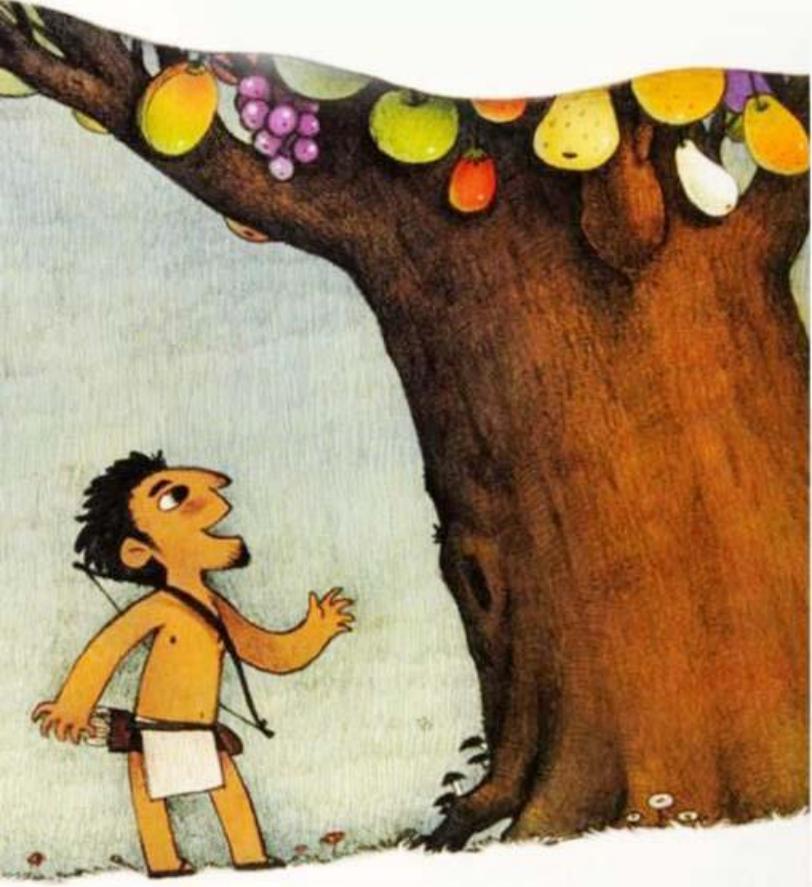
पेड़ अनेक प्रकार के रंग-बिरंगे फलों
से लदा हुआ था. कोटी ने तब तक
स्वादिष्ट फल खाये जब तक उसका
पेट पूरी तरह भर नहीं गया.

कोटी अपने गाँव वापस गया, लेकिन उसने उस पेड़ के बारे में किसी को नहीं बताया. हर रोज वह पेड़ के पास जाता था और छिपकर उसके फल खाता था.
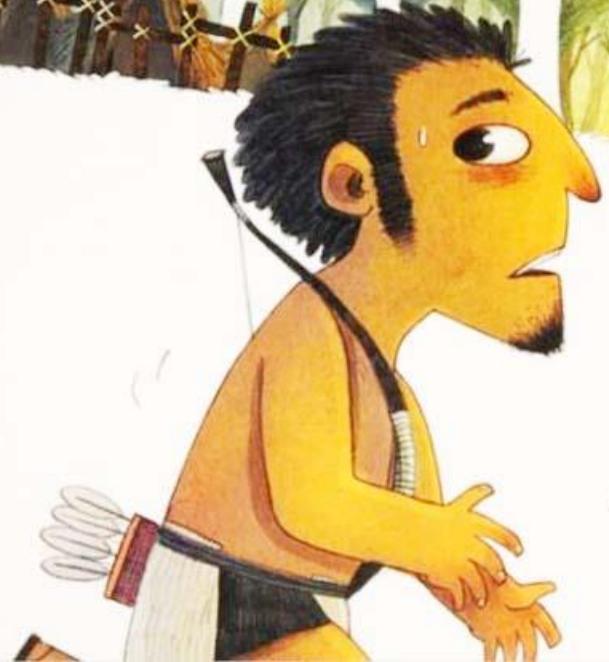
कोटी का भाई - साकी, उसे हर दिन जंगल में गायब होते देखता था. साकी जानना चाहता था कि आखिर कोटी किस रहस्यमय स्थान पर जाता था.

फिर एक दिन साकी ने कोटी का पीछा किया.
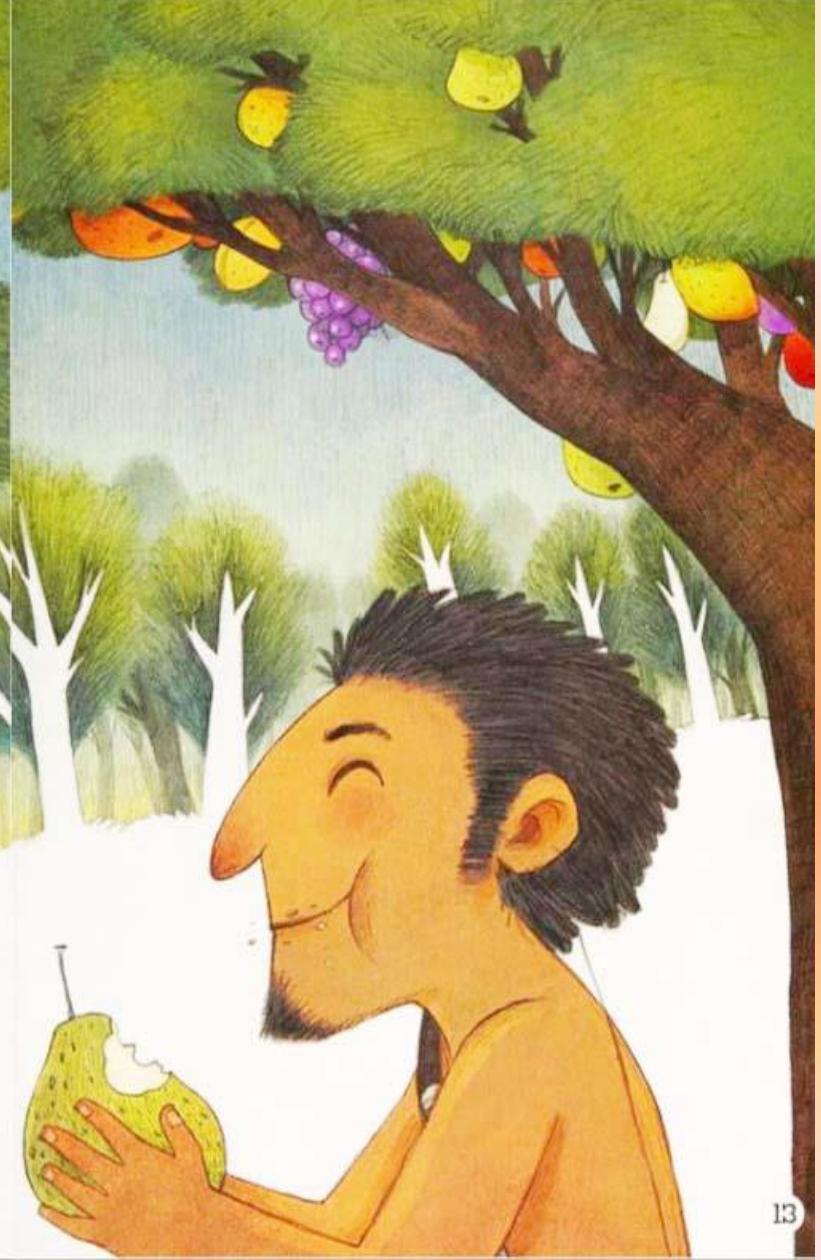
जब कोटी ने देखा कि साकी ने उसका पीछा किया था, तो पहले तो वह चौंका. लेकिन उसने अपने भाई के साथ भी फल साझा किए. साकी ने कहा कि उन्हें गांव के बाकी लोगों को उस अद्भुत पेड़ के बारे में बताना चाहिए ताकि हर कोई अच्छा खाना खा सके.
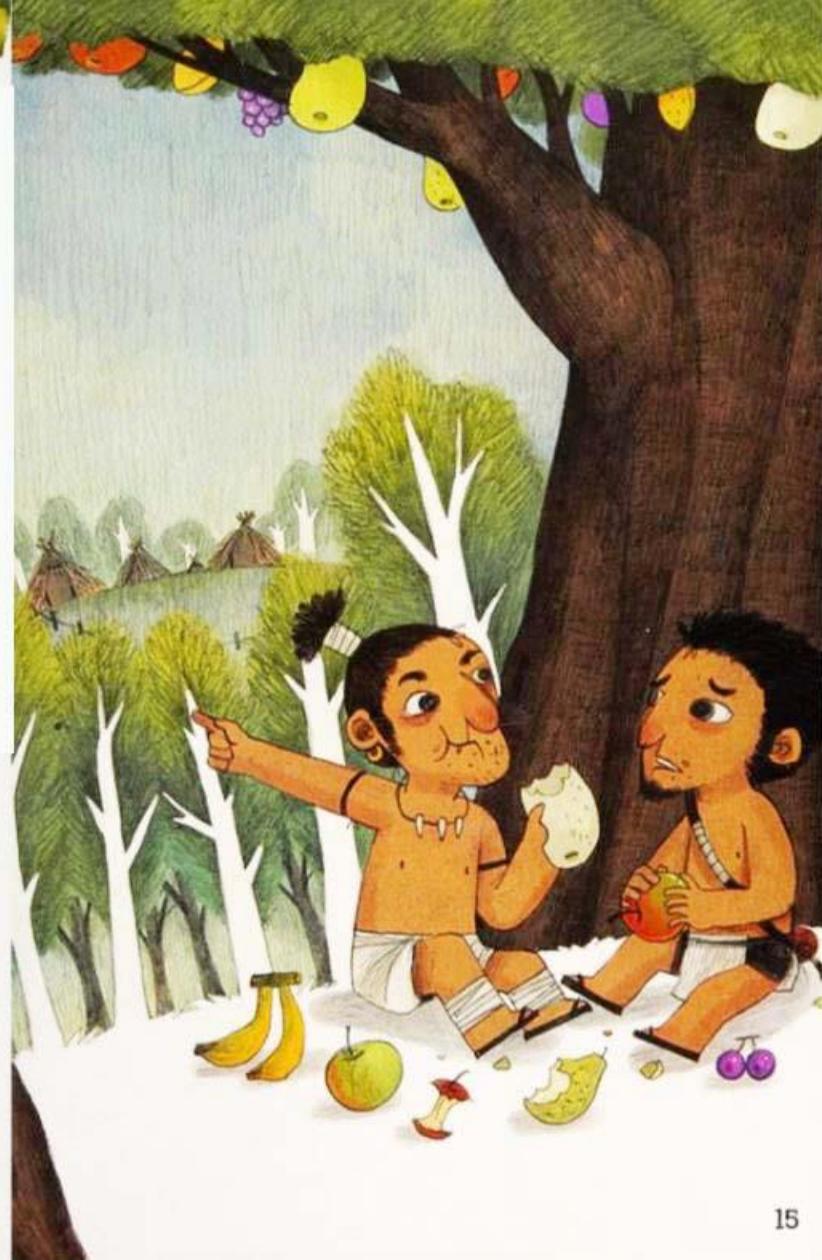
लेकिन कोटी उससे खुश नहीं था. दोनों भाई गाँव वापस चले गए और उन्होंने अन्य लोगों को उस पेड़ के बारे में बताया. अगले दिन वे गाँव वालों को पेड़ के पास ले गए और सबने भरपेट फल खाए. फिर उन्होंने शाखाओं पर लगे सभी फलों को तोड़ डाला.
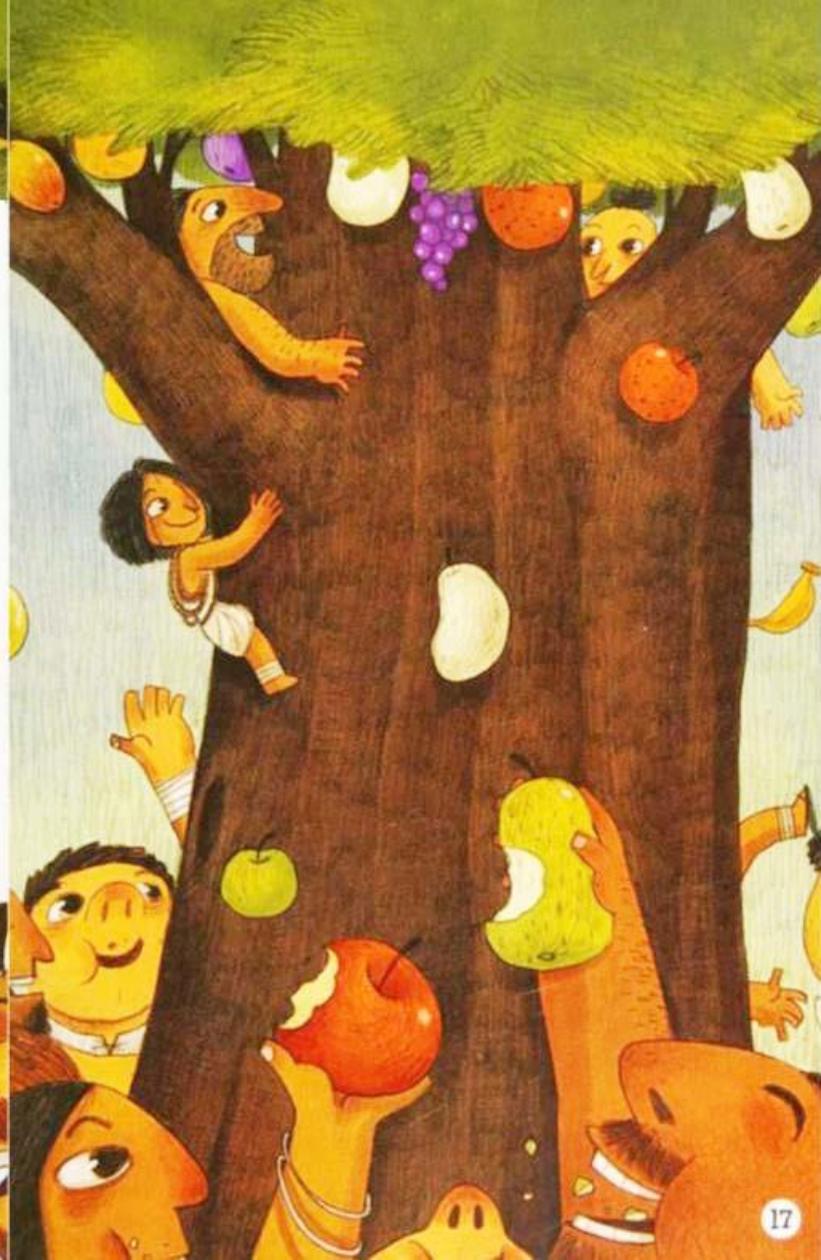
जब कोटी ने देखा कि लोग इतने सारे फल तोड़ रहे थे तो वो बहुत चिंतित हुआ. उसने ग्रामीणों को रोकने की कोशिश की, लेकिन सभी गांव वाले खाने में इतने व्यस्त थे कि उन्होंने कोटी की बात बिल्कुल नहीं सुनी.

अचानक एक बच्चे को ततैया ने काट लिया. ग्रामीणों ने उस हादसे के लिए पेड़ को जिम्मेदार ठहराया और उसे कुल्हाड़ी से काट डाला.
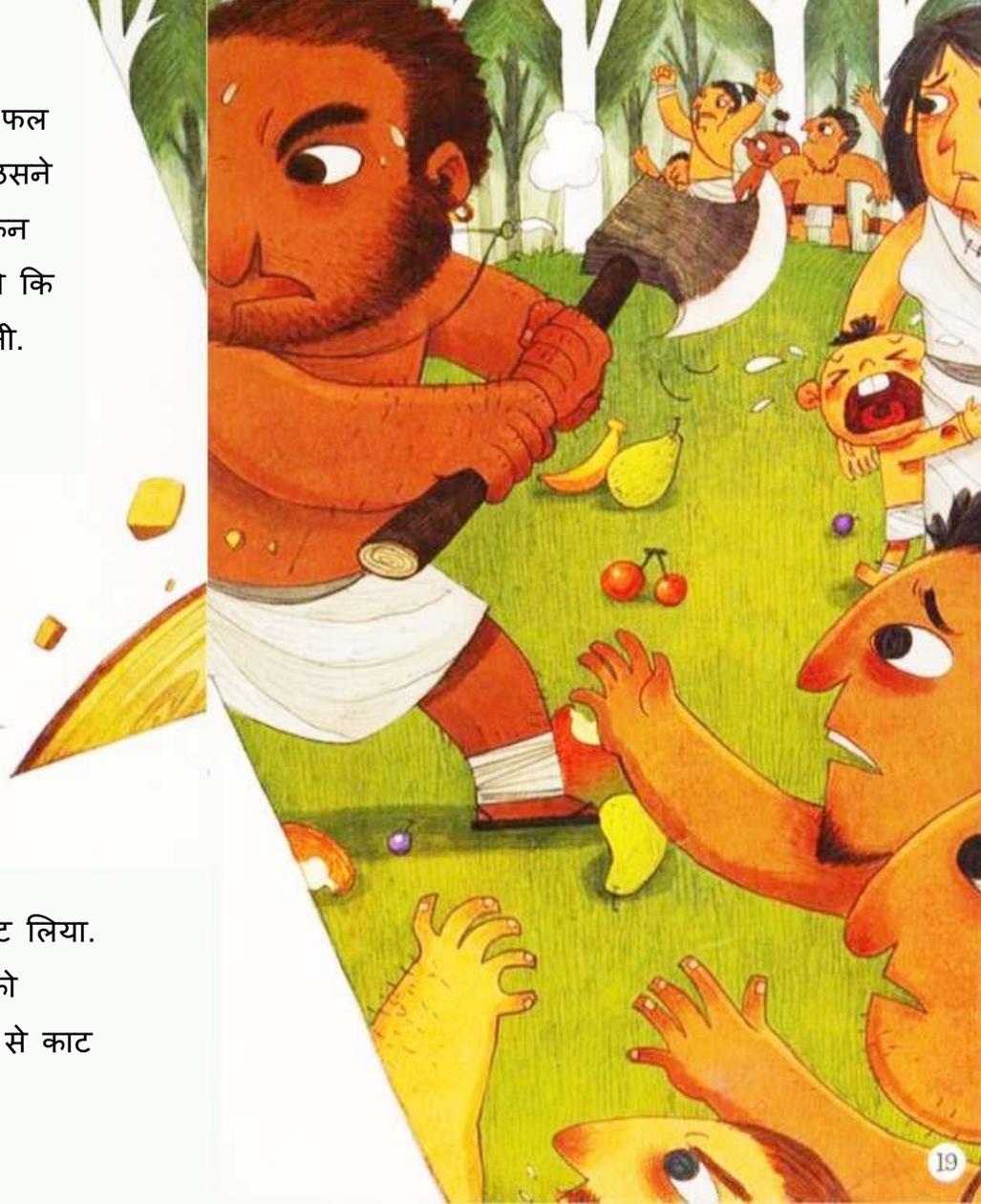
पेड़ ज़मीन पर गिर गया. तुरंत पेड़ के तने से तेज़ी से पानी बाहर निकलने लगा और हर तरफ सन्नाटा छा गया. पानी तब तक बहता रहा जब तक जंगल में बाढ़ नहीं आ गई.
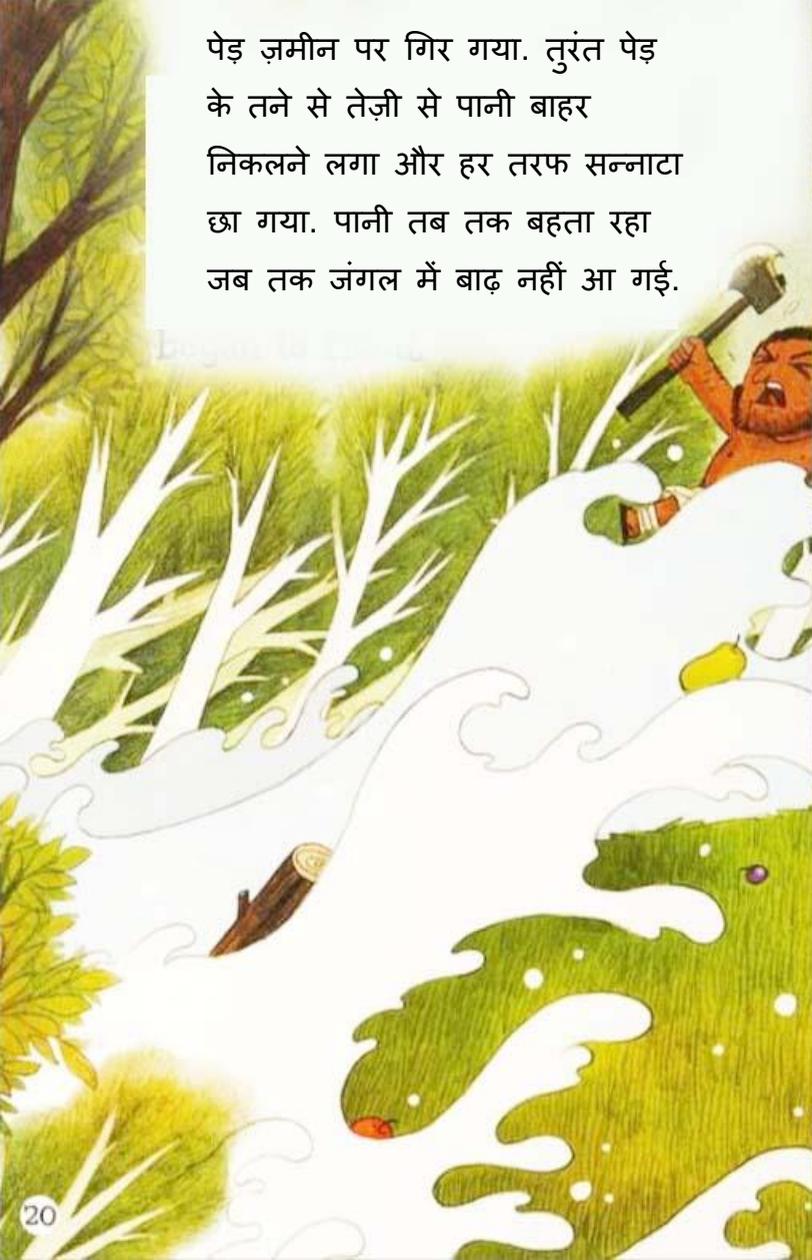
बचने के लिए लोग एक पहाड़ की चोटी पर भागे.
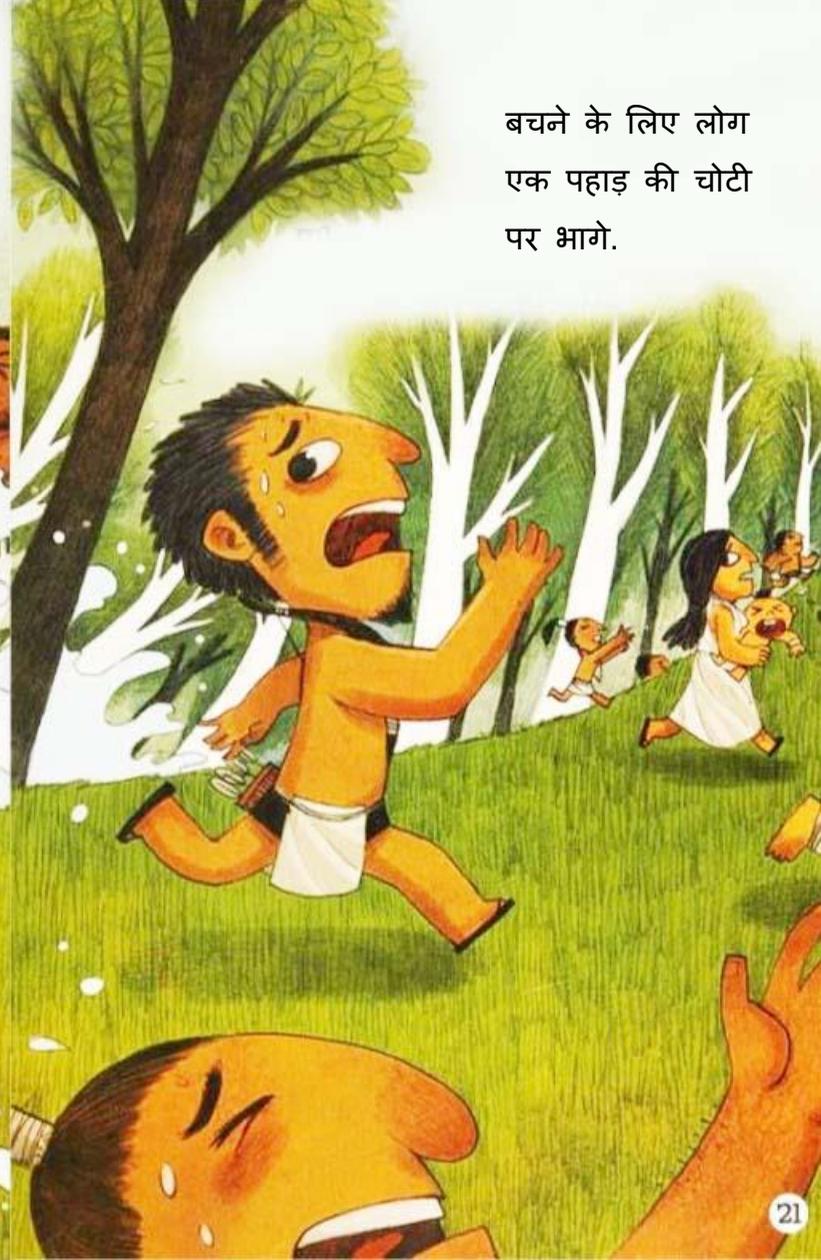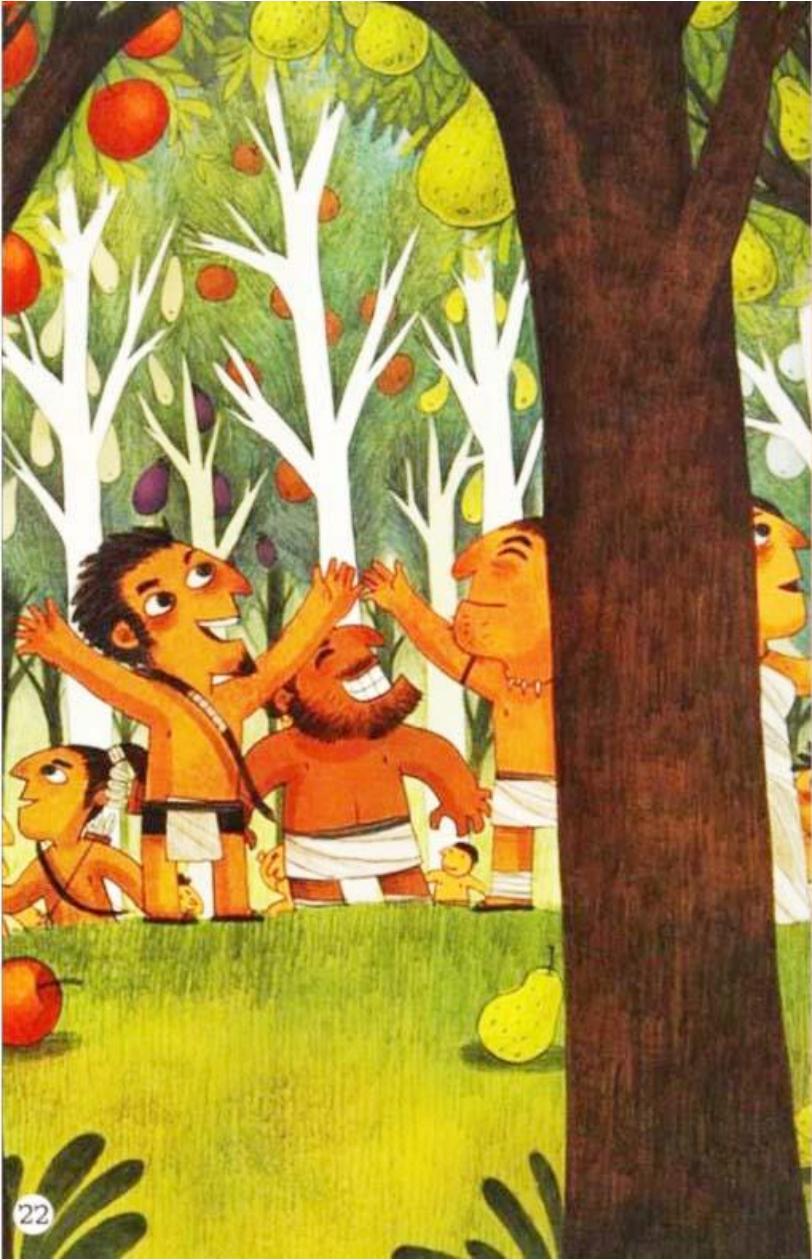
जब बाढ़ का पानी कम हुआ तो लोग अपने गांव लौटे. अब जंगल पेड़ों से भरा हुआ था, प्रत्येक की शाखाओं पर अलग-अलग फल उग रहे थे. अब लोग भरपेट अच्छे फल खा सकते थे. फिर उस दिन से लोगों ने हमेशा जंगल का सम्मान किया और वहां उगने वाले फलों को साझा किया.

कहानी की सीख

कई पारंपरिक कहानियों में एक नैतिक सीख होती है. आप कहानी से वो सबक सीख सकते हैं. इस कहानी की नैतिक सीख एकदम स्पष्ट नहीं है. शायद कोटी को शुरू से ही अन्य लोगों के साथ फल साझा करना चाहिए थे. या शायद नैतिक सबक यह है कि हमें प्राकृतिक दुनिया में पौधों की देखभाल करनी चाहिए. बहुत अधिक लालच से हम सभी जीवनदायी और आवश्यक चीज़ों को नष्ट कर सकते हैं.

तुम इसके बारे में क्या सोचते हो?